वहां गृहमंत्री जी गए थे, उन्होंने टैंट में रात गुजारी। प्रधानमंत्री जी ने भी दौरा किया। चीफ मिनिस्टर ने भी डेरा डाला। केन्द्र के मंत्री श्री काशी राम भी थे। मैं कच्छ की बात कर रहा हूं कि एक-एक तालुका में दो-दो स्टेट्स के मिनिस्टर तम्बू लगा कर बैठे हैं। वे गांव के एक-एक व्यक्ति से पूछ रहे हैं कि आपकी क्या जरूरत है। एक बात से बहुत दुख होता है कि आप जय श्रीराम बोलेंगे तो आपको पीयूष मिलेगा। थोड़ा ऊपर वाले का डर रखना चाहिए। मैं मुसलमानों, दलितों की बस्ती में गया और कहा कि आपका चूल्हा जलना चाहिए, खाना मिलना चाहिए, टैंट और कपड़े मिलने चाहिए। इस समय मैं कहूंगा कि मुझे खुशी होती है तो यह अच्छी नहीं लगेगा। मेरे घर आज भी सामान पड़ा है। मैं कह कर आया हूं कि जिसको जो चाहिए, आप भिजवा देना।

हमारे विजय गोयल जी आये थे, उन्होंने मुझे ऑफर किया, टेंट भिजवाये, कपड़े भिजवाये, घर का सामान भिजवाया और एक गांव को दत्तक लिया। उन्होंने 300 गैलवेनाइज्ड शीट के सेमी परमानेंट ब्लाक्स बनाने का मुझे प्रोमिस किया है, वह काम एक-दो दिन में हो जायेगा।

समय कम है, इसलिए मैं ज्यादा नहीं कहूंगा। लेकिन जो दुख-दर्द मैंने देखा है, सुना है, उसमें मैंने दुखी लोगों को बीच में काम किया है। ऐसा आज तक नहीं हुआ, गुजरात में तो वैसे ही साइक्लोन आता है, सूखा पड़ता है और यह भूकम्प आया, चार साल में 3-3 आपदाओं का हमने सामना किया है, लेकिन कभी किसी ने एलीगेशन नहीं लगाया। मैं आज एक अपील करना चाहूंगा कि एक-दूसरे के ऊपर आरोप लगाने के बजाय कंधे से कंधा मिलाकर हमें इस आपदा को पार करना है, जो दु:खी लोग हैं, उनकी मदद करनी है, जो लोग मरे हैं, उनकी आत्मा को सही तौर पर अगर हम शान्ति प्रदान करने की प्रार्थना करना चाहते हैं तो एक दूसरे के ऊपर एलीगेशन लगाने के बजाय कंधे से कंधा मिलाकर काम करें। अगर हम ऐसा करेंगे तो मुझे लगता है कि हमने हमारा सही फर्ज अदा किया।

आपने मुझे बोलने का मौका दिया, आपका धन्यवाद।

*[अनुवाद]*

**अध्यक्ष महोदय:** अब प्रधानमंत्री चर्चा में भाग लेंगे।

*[हिन्दी]*

**प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी):** अध्यक्ष महोदय, मैंने चर्चा में भाषण सुने हैं। जिन भाषणों के समय मैं उपस्थित नहीं था, वे भाषण भी मैंने कार्यवाही से देखे हैं। बहस का उत्तर कृषि मंत्री श्री नीतिश कुमार जी देंगे। मैं दो-चार बातें कहने के लिए खड़ा हुआ हूं।

गुजरात में जो कुछ हुआ, उसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। कुछ वर्षों से प्राकृतिक प्रकोप बढ़े हैं, कहीं सूखा, कहीं बाढ़, उड़ीसा में सुपर साइक्लोन, उत्तरांचल में भूस्खलन, जो भूकम्प का परिणाम था। मैं अलग-अलग राज्यों के नाम नहीं ले रहा हूं, मुझे डर है कि कहीं यह भी विवाद का विषय न बन जाये। यह समय विवाद का नहीं है। जब गुजरात की परिस्थिति पर विचार करने के लिए सर्वदलीय बैठक हुई थी तो उसमें जिस सद्भावना और सहयोग के वातावरण में सभी दलों ने अपने विचार व्यक्त किये, अपने सहयोग का हाथ बढ़ाया, उससे मुझे ऐसा लगा था कि प्राकृतिक आपदा में, एक राष्ट्रीय संकट में एक साथ खड़े होने की हमारी जो परम्परा है, उसका गुजरात के सम्बन्ध में भी पालन होगा। उस दिन बैठक की चर्चा को समाप्त करते हुए मैंने कहा था कि जो वातावरण बैठक में दिखाई दे रहा है, मैं आशा करता हूं कि सदन में भी वही भावना प्रतिबिम्बित होगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। सरकार को कठघरे में खड़ा करने की कोशिश की गई है। गनीमत है कि किसी ने यह नहीं कहा कि सरकार के कारण भूकम्प आया था। मैं इस विवाद को ज्यादा बढ़ाना नहीं चाहता, चुनाव निकट हैं। थोड़ी सी राजनीति मैं समझ सकता हूं। हम सब प्रतिपक्ष में थे तो हम भी थोड़ी सी राजनीति करते थे, लेकिन संकट के समय नहीं। यह प्राकृतिक आपदा है, सब इसका मिलकर सामना करें। मैं देखता हूं कि देश में तो एक होकर गुजरात की मदद करने की भावना थी और है। सभी राज्य सरकारों ने, मैं नाम नहीं लेना चाहता, कल किसी मित्र ने कहा कि पांच करोड़ रुपये उस राज्य में दिए थे, उस राज्य का नाम नहीं लिया गया। मेरे पास सब नाम हैं। पांच करोड़ रुपये देने वाले अनेक राज्य हैं। मैं चाहूंगा कि मैं सभा पटल पर उन राज्यों की सूची रख दूं*। उन सबको पता होना चाहिए कि कोई राज्य पीछे नहीं रहा। कम या ज्यादा और राज्यों में अलग-अलग दलों की सरकारें हैं, लेकिन गुजरात की त्रासदी में सब इकट्ठा हो गए, यह भावना थी। दुर्भाग्य से यह भावना केन्द्र में प्रतिलक्षित नहीं हुई...*(व्यवधान)*

**श्री सोमनाथ चटर्जी:** राहत और पुर्नवास के लिए किये गये प्रयासों का सबने समर्थन किया है...*(व्यवधान)* प्रधानमंत्री की ओर से इस तरह की बात कहने से बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा। हम सब एक हैं सबने यह कहा है यहां पर उन सब लोगों ने जिन्होंने यह सुना है मुझसे सहमत होंगे। मुझे नहीं पता कि आपको क्या रिपोर्ट मिली है हमने जो कुछ भी कहा वह यह है कि गुजरात के लिए और अधिक करना चाहिए यह गुजरात के लिए मिलजुल के कार्य करना चाहिए। आज देश एक है हमने कहा है कि आपदा प्रबंधन ऐसा होना चाहिए जैसा कि हमने पहले अन्य अवसरों पर देखा है, उसकी पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए। हमने केवल यही कहा है अत: प्रधानमंत्री जो यह कर रहे हैं कि हम लोग विभाजित हैं यह सही नहीं है हम गुजरात की स्थिति पर विभाजित नहीं हैं...*(व्यवधान)*

---

* गुजरात में हाल के भूकंप के प्रभावित व्यक्तियों के लिए विभिन्न राज्य सरकारों और विदेशों से प्राप्त सहायता के ब्यौरे की एक प्रति (हिन्दी और अंग्रेजी संस्करण) सभा पटल पर रखी। [ग्रन्थालय में रखा गया देखिए संख्या एल टी 3272क/2001]

*[हिन्दी]*

**श्री मुलायम सिंह यादव:** हम तो आपकी मदद कर रहे हैं...*(व्यवधान)*

*[अनुवाद]*

**अध्यक्ष महोदय:** श्री मुलायम सिंह यादव, ये क्या है? माननीय प्रधानमंत्री बोल रहे हैं।

*[हिन्दी]*

**श्री मुलायम सिंह यादव:** पूरा देश सुनेगा कि हमने कुछ नहीं किया...*(व्यवधान)* जहाँ भी अच्छा काम हुआ है हम लोगों ने आपको सपोर्ट किया है...*(व्यवधान)*

**श्री माधव राव सिंधिया:** जो अच्छा काम हुआ है वह अच्छी बात है लेकिन आपको जहां कमी है उसको स्वीकार करना चाहिए...*(व्यवधान)*

*[अनुवाद]*

**श्री सोमनाथ चटर्जी:** प्रधानमंत्री ने इस सभा में दो बार कहा है...*(व्यवधान)* कृपया ऐसा मत करिये हम सबने समर्थन किया है हमने कहा है कि और अधिक करना चाहिए सब लोग यहाँ मौजूद हैं...*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय:** श्री सोमनाथ चटर्जी, कृपया...

...*(व्यवधान)*

**श्री सुनील खां** (दुर्गापुर): हम सब गुजरात के लिए हैं...*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय:** यह क्या है?

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** अध्यक्ष महोदय, हम आरोपों की झड़ी सुनते रहे हैं।

**श्री मुलायम सिंह यादव:** पक्षपात न हो यह सुझाव दिया है मानिये तो मानिये नहीं मानिये तो मत मानिये।

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** कोई पक्षपात नहीं हुआ है। ये आरोप निराधार हैं। जब से भूकंप आया है, पहले दिन से यह बात कही जा रही है कि भेदभाव किया गया है। सर्वदलीय समिति की बैठक में भी यह मामला उठा था। उसमें गुजरात के मुख्यमंत्री उपस्थित थे। हमने उन्हें बुलाया था क्योंकि अगर किसी को स्पष्टीकरण की आवश्यकता हो तो उनका रहना जरूरी है उन्होंने यह भी कहा था कि इस तरह के आरोप गलत हैं। लेकिन अगर कोई सच्चाई इसमें है, तो आप मुझे लिखकर भेजिए, मुझे सूचित करिए कि भेदभाव कहां हुआ है, किसके साथ हुआ है। क्या ऐसी परिस्थिति में भी कोई भेदभाव कर सकता है? ऐसा कहना, सारे गुजरात का अपमान करना है।...*(व्यवधान)*

**श्री शिवराज वि. पाटील** (लातूर): महोदय, यहां पर सारे नेताओं ने, सारे लोगों ने यह कहा है कि सरकार जो कह रही है या दूसरी संस्थायें जो कर रही हैं, उसको हम पूरी तरह से मदद करने वाले हैं और करना जरूरी है। वह हमारा दायित्व है। उसके बाद अगर किसी नेता के सामने लोगों ने शिकायत की और वह शिकायत सरकार के सामने रखी गई, तो क्या सरकार का कर्तव्य नहीं होता है कि वह देखे कि शिकायत सही है या गलत है। समझकर, अगर सही है, तो उसके ऊपर सुधारने का कदम उठाए और अगर गलत है, तो वह ऐसा मालूम करे। इसके सिवाय यहां और कुछ नहीं कहा गया है।...*(व्यवधान)* प्रधान मंत्री जी, क्षमा करके एक मिनट का समय दीजिए। बार-बार यह कहा गया है कि ऐसी आपदा में जैसे आपने लातूर में आकर सहानुभूति जलाई थी, उसी प्रकार हमारी नेता ने गुजरात में जाकर लातूर की तरह हर जगह सहानुभूति जताई है। इसके सिवाय और कुछ नहीं कहा गया है।...*(व्यवधान)*

**गृह मंत्री (श्री लाल कृष्ण आडवाणी):** महोदय, प्रधानमंत्री जी ने सही उल्लेख किया है, जिस समय यह विषय सर्वदलीय बैठक में उठा था, तुरन्त केशुभाई पटेल जी, मुख्यमंत्री, गुजरात ने कहा कि अगर किसी ने इस प्रकार भेदभाव किया है, तो उसने पाप किया है। मैं आश्वासन देता हूं, अगर कोई मुझे स्पैसिफिक केस देगा, तो मैं उसके खिलाफ कार्रवाई करूंगा। ऐसा उन्होंने सर्वदलीय बैठक में कहा है। इसके बाद भी सारे जनरल आरोप हैं। कल मैंने सुना, शिवराज जी जैसा आपने कहा है, इन-इन स्थानों पर शिकायत मिलीं, भेदभाव हुआ और गांवों के नाम आपने लिए हैं। लेकिन आपने फिर कहा कि यह शिकायत सरकार के बारे में नहीं थी। ऐसा आपने कहा।

**श्री शिवराज वि. पाटील:** जी, हां।

**श्री लाल कृष्ण आडवाणी:** फिर आपसे यह अपेक्षा थी कि यह बताया जाता, अगर शिकायत सरकार के बारे में नहीं थी, तो किसके बारे में थी। यह आपने नहीं कहा। मैं आपको बताऊं, आप आज के अखबार उठाकर देख लीजिए। आज के अखबारों में यह आभास मिलेगा कि सरकार ने भेदभाव किया है, जबकि स्वयं आपने कल कहा कि सरकार के खिलाफ हमारा आरोप नहीं है। लेकिन कुल मिलाकर जो बातें कल कही गई हैं, वे सारी का सारी गुजरात सरकार के बारे में कही गई हैं, जो सरासर निराधार हैं और मिथ्या हैं।

**श्री शिवराज वि. पाटील** (लातूर): मैं यह कह रहा हूं, पहले भी हमने कहा है, मैं फिर कह रहा हूं, ये शिकायतें सरकार के खिलाफ नहीं कही गई हैं। मैंने पहले भी कहा है और अभी भी कह रहा हूं। मगर जो लोग वहां पर सामान देने के लिए गए थे, रिलीफ देने के लिए थे, वे सरकार के प्रतिनिधि नहीं हैं। वे किसी की तरफ से वहां जा रहे हैं और ऐसा कह रहे हैं। हमारी दृष्टि से वह आया है। हमारे जो नेता वहां गए थे, उनकी दृष्टि में आया है। क्या उन बातों को आपके सामने रखना हमारा काम नहीं है? हम सरकार के खिलाफ शिकायत नहीं कर रहे हैं। मैं अभी आपको यह कागज देता हूं, आप इस पर कार्रवाई कर सकते हैं। ...*(व्यवधान)*

*[अनुवाद]*

**अध्यक्ष महोदय**: यह सदस्यों के साथ चर्चा नहीं है यह सामान्य चर्चा है।

**श्री सोमनाथ चटर्जी**: प्रधानमंत्री भड़काने वाला वक्तव्य दे रहे हैं। प्रधानमंत्री को ऐसा नहीं करना चाहिए...*(व्यवधान)*

*[हिन्दी]*

**श्री लाल कृष्ण आडवाणी**: महोदय हम भारत सरकार की ओर से बोल रहे हैं। भारत सरकार और गुजरात सरकार इस मामले में भूकम्प के पहले दिन 26 तारीख से लेकर लगातार मिलकर काम कर रही है, इसलिए विपक्ष के नेता ने जो बात कही थी उन्होंने इस बात का जिक्र नहीं किया था कि ये आरोप किनके बारे में है। मैंने जब शिवराज जी की बात को सुना तो मेरे मन में संतोष हुआ उनका कहना था कि हमारी शिकायत सरकार से नहीं है और आज आपने फिर से दोहराया। लेकिन कुल मिलाकर जितने भाषण हुए हैं उनसे जो आभास मिला है। उनमें से अकेले आपने स्पष्ट कहा की मेरी शिकायत सरकार से नहीं है।...*(व्यवधान)*

*[अनुवाद]*

**अध्यक्ष महोदय**: कृपया अपना स्थान ग्रहण करें।

...*(व्यवधान)*

**श्री प्रियरंजन दास मुंशी**: आपके मुख्यमंत्री ने कहा...*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय**: यह क्या है। कृपया अपना स्थान ग्रहण करें यह सदस्यों के बीच नहीं होनी चाहिए।

...*(व्यवधान)*

**श्री प्रियरंजन दासमुंशी**: श्रीमती सोनिया गांधी ने नहीं कहा था बल्कि श्री केशुभाई पटेल ने कहा है...*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय**: श्री प्रिय रंजन दासमुंशी जी, वे आपकी बात से सहमत नहीं हैं। कृपया अपने स्थान पर बैठ जाइए।

...*(व्यवधान)*

**श्री प्रियरंजन दासमुंशी**: यह श्री केशुभाई पटेल का वक्तव्य है। आप विपक्ष का बिना किसी बात के अपमान नहीं कर सकते हैं।...*(व्यवधान)*

**सोमनाथ चटर्जी**: वे राजनीति चला रहे हैं...*(व्यवधान)*

*[हिन्दी]*

**श्री रामदास आठवले**: गुजरात के लोगों की शिकायत है कि भेदभाव हुआ है।...*(व्यवधान)*

*[अनुवाद]*

**अध्यक्ष महोदय**: यह कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

...*(व्यवधान)**

*[हिन्दी]*

**श्री लाल कृष्ण आडवाणी**: महोदय, मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करता हूं कि अगर आप वहां जाएंगे...*(व्यवधान)* मैं वहां कई बार गया हूं।...*(व्यवधान)*

महोदय, बहुत से अधिकारी और कर्मचारी, जिनके परिवार के लोग मर गए वे दिन भर मेरे साथ काम करते रहे। मैं उनसे शाम को पूछता कि आपका और आपके परिवार का क्या हुआ तो वे कहते हैं कि हमारा तो सब कुछ समाप्त हो गया। वे छः दिन से वही पेंट और शर्ट पहन कर मेरे साथ घूमते रहे और यहां इस प्रकार की बातें की जाती हैं, यह सरासर अन्याय है।...*(व्यवधान)* यह सरकार के साथ अन्याय है।...*(व्यवधान)* मैं इससे ज्यादा और कुछ नहीं कहना चाहता।...*(व्यवधान)*

*[अनुवाद]*

**श्री संतोष मोहन देव** (सिलचर): श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी, आप माननीय प्रधानमंत्री जी को गलत सूचना दे रहे हैं। ...*(व्यवधान)*

---

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

**श्री प्रियरंजन दासमुंशी:** हमारे नेता ने कहा है कि हमें गुजरात के लोगों के साथ हीरो की तरह व्यवहार करना चाहिए तथा माननीय प्रधान मंत्री ने कहा...*(व्यवधान)* यह क्या है?...*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय:** श्री प्रियरंजन दासमुंशी जी, कृपया बैठ जाइए। यह सब क्या है?

...*(व्यवधान)*

*[हिन्दी]*

**अध्यक्ष महोदय:** आपको कितनी बार बोलना पड़ेगा कि आप बैठ जाइए।

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** मैं ऐसा विश्वास करता हूं कि पाटील साहब ने जो स्पष्टीकरण दिया है उससे उनके दल के सभी लोग सहमत हैं और इसी के अनुसार वे अभिव्यक्ति करेंगे, आचरण करेंगे।...*(व्यवधान)*

महोदय, मैं स्वयं गुजरात गया था और मैंने वहां की स्थिति को देखा कि वहां कैसी स्थिति है। मेरे बारे में कहा गया कि मैं तो हवाई जहाज पर घूम कर आ गया, उतरा भी नहीं, ऐसे ही वापस आ गया।...*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय:** आप अभी नहीं, बाद में बोलिए।

...*(व्यवधान)*

*[अनुवाद]*

**अध्यक्ष महोदय:** माननीय प्रधानमंत्री जी बोल रहे हैं।

...*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय:** आप उन्हें बोलने नहीं दे रहे हैं। यह सही तरीका नहीं है। श्री संतोष मोहन देव की कृपया बैठ जाइए। श्री मोहाले जी कृपया अपने स्थान पर जाइए।

...*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय:** श्री मोहाले जी, कृपया अपने स्थान पर जाइए।

...*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय:** श्री मोहले जी, आपका स्थान कहां है? कृपया पहले अपने स्थान पर जाइए।

...*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय:** श्री बंसल, यह सब क्या है?

...*(व्यवधान)*

**श्री प्रियरंजन दासमुंशी:** महोदय, उन्हें गलत सूचना दी गई है। उन्हें गुमराह किया गया है।...*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय:** श्री आठवले जी, कृपया बैठ जाइए।

...*(व्यवधान)*

*[हिन्दी]*

**श्री हरीभाऊ शंकर महाले** (मालेगांव): अध्यक्ष जी, प्रधान मंत्री जी को अपनी बातों को संयम के साथ कहना चाहिए।

*[अनुवाद]*

**अध्यक्ष महोदय:** कृपया साथ-साथ मत बोलिए।

*[हिन्दी]*

**श्री रामदास आठवले:** मुख्यमंत्री जी को हटाओ।

**श्री मुलायम सिंह यादव:** प्रधानमंत्री जी को आज क्या हो गया है।...*(व्यवधान)*

*[अनुवाद]*

**श्री पवन कुमार बंसल:** महोदय, मैंने ऐसा कहा था...*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय:** श्री बंसल, यह क्या है? कृपया बैठ जाइए। आप हर बात पर स्पष्टीकरण चाहते हैं।

...*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय:** श्री बंसल, कृपया बैठ जाइए। आप हर बात पर स्पष्टीकरण कैसे मांग सकते हैं?

...*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय:** श्री बंसल, बहुत हो गया। आपको कुछ धैर्य करना चाहिए। यह क्या है? आप सभा के नेता को भी बोलने नहीं दे रहे हैं। आप बीस मिनट से अधिक समय बोल चुके हैं।

...*(व्यवधान)*

*[हिन्दी]*

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** अभी चर्चा समाप्त हो रही थी तो किसी एक सदस्य ने कहा कि विदेशों से 441 टेंट आये थे वे कहां गये...*(व्यवधान)* क्या मतलब है इसका, यह आरोप लगाया गया...*(व्यवधान)*

*[अनुवाद]*

**अध्यक्ष महोदय:** आप साथ-साथ मत बोलिए। यह सब क्या है?

*[हिन्दी]*

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** अध्यक्ष महोदय, मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि जो टेंट आये थे वे टेंट कच्छ डिस्ट्रिक्ट के कलैक्टर के चार्ज में दिए गये और उन टैंटों को स्कूल में रखा गया है जिससे स्कूल चल सकें।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष जी, सवाल यह है कि देश में और सदन में हम किस तरह का वातावरण बनाना चाहते हैं। जैसा मैंने कहा कि सभी दलों की सरकारों ने बड़े पैमाने पर सहायता दी। राज्य सरकारों ने होड़ लगी थी कि कौन पहले सहायता देगा तथा जनता के सभी वर्गों के लोगों ने 'प्रधान मंत्री रिलीफ फंड' में सहायता दी है। अभी तक 200 करोड़ रुपये से ज्यादा इकट्ठे हो चुके हैं जो पहले कभी नहीं हुए क्योंकि लोग गुजरात की त्रासदी से सचमुच में पीड़ित हैं, गुजरात के लोगों के दुःख को बांटना चाहते हैं। इतनी बड़ी संख्या में लोगों की मृत्यु, विनाश, घरों का ढहना, इस चर्चा में बहुत से ऐसे उदाहरण दिए गये, ऐसे-ऐसे प्रसंग प्रस्तुत किये गये जिन्हें सुनकर सचमुच हृदय रोने लगता था। अगर एक ओर प्रकृति का प्रकोप दिखाई देता है तो दूसरी ओर मानव की उदारता भी दिखाई दी। जिस दिन भूकम्प आया, उसी दिन से गुजरात की सरकार सक्रिय हो गयी, गुजरात की सरकार ने कदम उठाए। केशु भाई ने गुजरात की जनता को सम्बोधित किया। टेलीविजन काम नहीं कर रहा था इसलिए रेडियो से किया। वह पुलिस कंट्रोल रूप में जाकर बैठ गए। एक सदस्य ने कहा कि दिल्ली में तीन बजे बैठक क्यों हुई जबकि भूकम्प पाँच बजे या छः बजे या आठ बजे आया था—आपको बैठक करने में इतने घंटे क्यों लगे? अध्यक्ष महोदय, क्राइसिस मैनेजमैंट कमेटी है। उसमें जिम्मेदार लोग हैं। जब भूकम्प की खबर आई तो सबको सूचना देनी थी। भूकम्प की कितनी विकरालता है, आपदा का क्या स्वरूप है, यह जानने में भी समय लगा, इसलिए तीन बजे बैठक का आयोजन किया गया। 12 बजे तक सब लोग गणतंत्र दिवस के प्रदर्शन में शामिल थे। अब हमें सदन में कटघरे में खड़ा करके पूछा जा रहा है कि तीन बजे बैठक क्यों हुई, इससे पहले क्यों नहीं हुई? मैं क्या जवाब दूं? कैबिनेट की मीटिंग उसी शाम हुई। गुजरात की सरकार सक्रिय हो गई थी। गुजरात के चीफ सैक्रेटरी उसी दिन भुज गए। आडवाणी जी तत्काल गणतंत्र दिवस की परेड के बाद गुजरात चले गए। वह वहां जाने वाले पहले सदस्यों में से एक थे। फिर भी आरोप लगाए जा रहे हैं। यह ठीक नहीं है। यह दुख पहुंचाने वाली बात है। ऐसी राजनीति नहीं होनी चाहिए। विदेशों से जो सहायता मिली है, मैं उसका विवरण आपके सामने रखूं तो आपको आनन्द होगा कि सामने संसार ने इस त्रासदी के समय पीड़ितों की रक्षा के लिए आगे-आगे हाथ बढ़ाया। इन देशों के मेरे पास नाम हैं।

जैसा किसी माननीय सदस्य ने कहा कि वहां जहाज खड़े करने की जगह नहीं थी। जहाज कहां उतारे जाएं, इसके लिए स्थान नहीं था। सहायता से भरे जहाज आ रहे थे। उन देशों की सूची भी मैं सदन के पटल पर रखना चाहता हूं, जिन्होंने इस आपदा के समय हमारी सहायता की। मानवता पीड़ित हो गई, मानवता चिंतित हो गई। सारे देश में भावना हुई कि गुजरात को बचाना है, गुजरात की त्रासदी में उसे राहत पहुंचानी है लेकिन कुछ लोगों ने राजनीति नहीं छोड़ी। अगर कोई भेदभाव हो रहा था तो एक बार उसका उल्लेख किया जा सकता था। लगातार उसकी रट लगाना और हर भाषण में यह कहना, आपको मालूम है कि इसका क्या परिणाम हुआ है। आपके विदेशों में यह भाषण छपे हैं कि मुसलमानों और हरिजनों के साथ भेदभाव किया जा रहा है। विदेशी अखबारों ने हैडलाइन देकर छापे हैं। थोड़े से राजनीतिक लाभ के लिए देश की बदनामी हुई है। यह बार-बार दोहराने की क्या जरूरत है? गुजरात के मुख्यमंत्री ने सर्वदलीय बैठक में कह दिया कि ऐसी घटनाएं होने पर वे मेरे सामने लाई जाएं। ये गांव के जो नाम लिख कर लाए हैं, वे पाटील साहब अभी लाए हैं। हम इनका भी पता लगाएंगे। हम सच्चाई को सामने लाएंगे और आपको कठघरे में खड़ा करेंगे। आपने गुजरात पर लांछन लगाया है। आपने इस राष्ट्रीय संकट का राजनीतिक दृष्टि से लाभ उठाने की कोशिश की है। यह खेद की बात है। ...*(व्यवधान)*

*[अनुवाद]*

**अध्यक्ष महोदय:** यह क्या है। कृपया सभा में व्यवस्था बनाए रखें।

*...(व्यवधान)*

**श्री प्रियरंजन दासमुंशी:** हम चाहते हैं कि कि आप प्रधानमंत्री के रूप में बोले, न कि दल के नेता के रूप में...*(व्यवधान)*

*[हिन्दी]*

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** मैं इसमें विस्तार से जाना नहीं चाहता। उड़ीसा के समय भी राजनीति की गई थी।

**श्री शिवराज वि. पाटील:** क्या इस प्रकार बोल कर सबकी सहानुभूति और सहयोग लेने की कोशिश कर रहे हैं?

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** मेरा बोलना आपको अच्छा नहीं लग रहा है?

अध्यक्ष महोदय, मैं पाटिल साहब से एक सवाल पूछ रहा हूं। अगर पाटिल साहब...

*[अनुवाद]*

**श्री बसुदेव आचार्य** (बांकुरा): महोदय, वे प्रधानमंत्री के रूप में बोल रहे हैं न कि भाजपा के नेता के रूप में ...*(व्यवधान)*

*[हिन्दी]*

**श्री शिवराज वि. पाटील:** माननीय प्रधानमंत्री जी यहां नहीं थे, ऐसा किसी ने नहीं बोला है।

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** पाटिल साहब, अगर आप चर्चा में भाग नहीं लेते और यह स्पष्टीकरण नहीं देते...*(व्यवधान)* यह प्रचार योजनाबद्ध तरीके से किया गया कि गुजरात में हरिजनों और मुसलमानों के साथ...*(व्यवधान)*

**श्री शिवराज वि. पाटील:** नहीं, ऐसा नहीं है। उनका भाषण रिकार्ड पर है, टेप पर है और राइटिंग में है। आप टी.वी. पर देखिए। उन्होंने ऐसा नहीं कहा। हम लोग यहां बैठे हुए हैं, इसलिए आप ऐसा कह रहे हैं...*(व्यवधान)*

*[अनुवाद]*

**श्री ए. सी. जोस** (त्रिचूर): महोदय, उन्हें गलत सूचना दी गई है...*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय:** यह क्या है? क्या यह प्रश्न पूछने का तरीका है?

*...(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय:** मैं किसी को अनुमति नहीं दे रहा हूं।

*...(व्यवधान)*

*[हिन्दी]*

**श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी** (खजुराहो): माननीय प्रधानमंत्री जी, हम आपसे उम्मीद करते थे कि आप साफ बात करेंगे...

*[अनुवाद]*

**अध्यक्ष महोदय:** श्री चतुर्वेदी, यह क्या है?

*...(व्यवधान)*

**श्री प्रवीण राष्ट्रपाल** (पाटन): यह पहले मीडिया में उछाला गया था।...*(व्यवधान)*

*[हिन्दी]*

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** अध्यक्ष महोदय, मैं इस विवाद को आगे नहीं बढ़ाना चाहता लेकिन मेरे मन की जो भावनायें थीं, उन्हें मैंने व्यक्त किया है। निर्णय जनता करेगी। अंतिम निर्णय तो जनता को करना है। अभी कुछ विधानसभाओं के उप-चुनाव हुये थे और उनका परिणाम आया है। जनता बोल रही है...*(व्यवधान)*

*[अनुवाद]*

**अध्यक्ष महोदय:** प्रधानमंत्री के भाषण के अलावा कुछ भी कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*[हिन्दी]*

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** अध्यक्ष महोदय, एक सर्वदलीय बैठक हुई थी जिसमें कुछ अच्छे सुझाव आये थे। श्रीमती सोनिया

गांधी ने एक सुझाव रखा था कि एक स्थायी समिति होनी चाहिए और प्राकृतिक आपदा से निपटने के लिए कोई स्थायी तंत्र होना चाहिए। एक नेशनल डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी होनी चाहिए। केवल उड़ीसा के समय नहीं, इस बार भी यह बात हमारे ध्यान में आयी है कि जब देश पर भारी प्राकृतिक विपदा आती है तो जिस मात्रा में तैयारी होनी चाहिए, वह नहीं होती है। सचमुच में हमने प्रश्न को इस दृष्टि से नहीं देखा। यद्यपि लातूर ने हमें चेतावनी दी थी जब ऐन वक्त पर अचानक भूकम्प आ गया था। क्या करें? सैंकड़ों लोग मलबे के नीचे दब गये। उस मलबे को कैसे हटाया जाये, कहां मशीनें हैं, किस तरह से पत्थर और सीमेंट को काटा जाये? लोग दबें हैं और चिल्ला रहे हैं। उन्हें इस त्रासदी से निकाला नहीं जा सकता। निकालने वाले अपने आठ-आठ आंसू रो रहे हैं। इस कार्य के लिए ट्रेड लोग चाहिए। प्लेन हाइजैकिंग के समय भी यही हुआ था। ऐसे ही विपदा आती हैं, चाहे सुलतानी हों या आसमानी हों। इसलिए यह तय किया गया है। वैसे तो उड़ीसा के तूफान के बाद इस सुझाव पर विचार करना शुरू कर दिया था कि कोई परमानेंट अथॉरिटी होनी चाहिए और हम इस तरह की परमानेंट अथॉरिटी का गठन करेंगे। इसके लिए अलग-अलग ग्रुप बनाये गये हैं। वे इस संबंध में अपनी सिफारिशें देंगे।

केन्द्र से भेदभाव नहीं होता। उड़ीसा में हमने कम दिया था, अब गुजरात में ज्यादा दे रहे हैं।...*(व्यवधान)* यह ठीक नहीं है।

*[अनुवाद]*

**श्री सोमनाथ चटर्जी:** उस समय, हम आपके पास काफी आशा के साथ आथे थे परन्तु आपने कहा: ''धन है कहां?''

*[हिन्दी]*

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** आपको 130 करोड़ रुपया दिया था।...*(व्यवधान)*

**श्री सोमनाथ चटर्जी:** तब आपके पास फंड नहीं था, उसके बाद में फंड हुआ होगा। अभी तो रास्ता खोल दिया गया था, रिजर्व बैंक को ऑर्डर दे दिया था...*(व्यवधान)* वह भी तो भारत की जनता है।...*(व्यवधान)*

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** फाइनेन्स कमीशन की रिपोर्ट आ गई है।...*(व्यवधान)*

**श्री सोमनाथ चटर्जी:** आपने गुजरात के बारे में जो कुछ किया है, वह सही किया है, हमने उसे सपोर्ट किया है।

*[अनुवाद]*

हमने कहा, ''भविष्य में अन्य राज्यों का सोचें और कृपया वही मानक अपनाएं।''

*[हिन्दी]*

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** अच्छा किया है।

**श्री सोमनाथ चटर्जी:** हम यही बोल रहे हैं और आप यहां गुस्सा करके आये हैं...*(व्यवधान)* हम यही बोल रहे हैं और कुछ नहीं बोल रहे हैं।

**श्री मुलायम सिंह यादव:** आज गुस्सा कहां से आ गया। ...*(व्यवधान)*

**श्री सोमनाथ चटर्जी:** प्राइम मिनिस्टर बोलते हैं कि पैसा कहां है।

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** अध्यक्ष महोदय, हमने हुडको को इस बात की अनुमति दी है कि गुजरात के पुनर्निर्माण के लिए वह 1500 करोड़ रुपये के टैक्स फ्री बाण्ड जारी कर सकता है। गुजरात का पुनर्निर्माण करना है। विध्वंस में रचना करनी है। इसके लिए धन की कमी नहीं होगी। अब अगर यह कहा जाए कि धन की कमी नहीं होगी तो मुझसे पूछा जायेगा कि आपने यह बात वैस्ट बंगाल के लिए क्यों नहीं कही थी।

**श्री सोमनाथ चटर्जी:** जरूर पूछेंगे, कौन नहीं पूछेगा ...*(व्यवधान)*

**कुंवर अखिलेश सिंह:** प्रधानमंत्री जी, आप पूरे देश के प्रधानमंत्री हैं और हम सबकी रक्षा आपको करनी है।...*(व्यवधान)*

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** अध्यक्ष महोदय, केन्द्र में कोई भेदभाव नहीं है।

**श्री सोमनाथ चटर्जी:** रुपया मांगने के लिए आपके पास गये थे, अब वहां जाकर आपके मिनिस्टर ने उसके खिलाफ भाषण दे दिया।...*(व्यवधान)*

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** आप वैस्ट बंगाल की राजनीति यहां मत लाइये।...*(व्यवधान)*

**श्री सोमनाथ चटर्जी:** आज आप राजनीति कर रहे हैं...*(व्यवधान)* आज आप अटल बिहारी वाजपेयी और बी.जे.पी. की माफिक बोल रहे हैं। प्रधानमंत्री जी हम आपका आदर करते थे।...*(व्यवधान)*

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** अध्यक्ष जी, केन्द्र के मन में कोई भेदभाव नहीं है...*(व्यवधान)* पिछले दो-ढाई साल से सरकार चली है। इस दौरान केन्द्र के राज्यों के साथ बहुत अच्छे संबंध रहे हैं। आप अपने-अपने राज्यों के मुख्य मंत्रियों से पूछ लीजिए।

*[अनुवाद]*

**श्री सोमनाथ चटर्जी:** हम श्री अटल बिहारी वाजपेयी को अलग तरह से देखते हैं परन्तु आप आज गिर रहे हैं। आप जानते हैं कि हम व्यक्तिगत रूप से आपका सम्मान करते हैं।

*[हिन्दी]*

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** अध्यक्ष महोदय, भुज में मैंने देखा कि एक अस्पताल पूरी तरह से ध्वस्त हो गया। हमने यह प्रस्ताव रखा है कि केन्द्र सरकार उस अस्पताल को पूरी तरह से नये सिरे से बनाने के लिए तैयार है।

**श्री सोमनाथ चटर्जी:** आप बनाइये, हम सपोर्ट करते हैं।

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** प्राइम मिनिस्टर रिलीफ फंड में जो धन आया है उसका हम इस तरह से सदुपयोग करेंगे।

**श्री सोमनाथ चटर्जी:** उसे हम पूरा सपोर्ट करते हैं।

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** नहीं, हम और भी ऐसा बातें कहने वाले हैं।

**श्री सोमनाथ चटर्जी:** वहां से कुछ बचेगा तो थोड़ा सा इधर भी भेजियेगा।

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी:** अध्यक्ष महोदय, हमारे जीवन में जब इस तरह की आपत्तियां आती हैं तो वे हमारा इम्तिहान लोती हैं, एक परीक्षा लेती हैं। ऐसा लगता है कि प्रकृति ने हमारा इम्तिहान लेने का फैसला कर लिया है। प्रकृति को तो हम पछाड़ देंगे, मगर मन में जो विकृति है उससे लड़ना बहुत जरूरी है। राजनीति अपनी गति से चलेगी, चुनाव होंगे, सरकारें बदलेंगी। लेकिन जब सारी दुनिया हमारी मदद के लिए दौड़ रही है तो हम समझ सकते हैं कि दुनिया में इस त्रासदी का कितना परिणाम हुआ है।

सारा देश एक होकर चुनौती का सामना करे, इस बात की ज़रूरत है। मैं समझता हूं कि इस चर्चा के बाद ऐसा वातावरण बनेगा कि आरोप-प्रत्यारोप का पर्व समाप्त हो जाएगा, और उद्योग पर्व आरंभ होगा और हम गुजरात का पुनर्निर्माण करेंगे। अलग-अलग पैकेज दिये गये हैं। कच्छ के लए अलग पैकेज है, उद्योगों के लिए गुजरात की सरकार ने अलग घोषणा की है। इसके साथ जो और जिले हैं जो कच्छ का भाग नहीं हैं, उनमें भी भूकंप आया था, उनकी भी चिन्ता हम कर रहे हैं। गुजरात सरकार जैसी सहायता चाहती है, वह हम दे रहे हैं और मैं सब माननीय सदस्यों से कहूंगा कि अब रचनात्मक दृष्टि से विचार करना शुरू करें।

**श्री जोवाकिम बखला** (अलीपुरद्वारस): माननीय अध्यक्ष महोदय, एक महत्त्वपूर्ण विषय पर आपने मुझे बोलने का मौका दिया। गुजरात में जो भूकंप आया, इस तरह की त्रासदी, इस तरह की प्राकृतिक आपदा पहले कब हुई होगी, यह कहना मुश्किल है। इस तरह की आपदा जब आती है तो वह कब और कहां किस रूप में आएगी, वह कहना भी कठिन है। कभी बाढ़ के रूप में आ सकती है, कभी भूस्खलन के रूप में आ सकती है, कभी सूखे के रूप में आ सकती है और कभी ऐसा भी हो सकता है, जैसा गुजरात के कुछ क्षेत्रों में हुआ कि भूकंप के रूप में बरबादी करते हुए प्राकृतिक आपदा आ जाए।

प्राकृतिक आपदा आने के बाद जिस परिस्थिति का सामना हमें करना पड़ता है, उसके लिए जिस तैयारी की आवश्यकता है, उस तैयारी में हम लोग कहां तक चूके, इस विषय पर चिन्ता करने की आवश्यकता है। प्राकृतिक आपदाओं को कोई टाल नहीं सकता है लेकिन प्राकृतिक आपदाएं आने के पहले अहतियात के तौर पर जो कार्यक्रम होने चाहिए, जो तैयारियां होनी चाहिए, जिस तरह की सावधानी बरतने की आवश्यकता है, उस पर विचार करने की आवश्यकता है।

अध्यक्ष महोदय, बाढ़ के प्रकोप से, भूकंप के प्रकोप से, भूस्खलन के प्रकोप से, चाहे सूखे के प्रकोप से जिस तरह की तबाही हमारे देश में विभिन्न क्षेत्रों में होती है, उसका सामना अगर करना है तो हमें दलगत राजनीति से ऊपर उठकर एक साथ मिलकर इन समस्याओं का समाधान करने के उपाय ढूंढने पड़ेंगे। इसलिए मैं निवेदन करता हूं कि इस तरह के उपाय राष्ट्रीय स्तर पर और राज्य स्तर पर किये जाएं ताकि इस तरह के प्राकृतिक प्रकोप जब हमारे ऊपर आएं तो हम तत्काल तैयार रहें। उस समय जो हानि होती है, जिन लोगों का नुकसान होता है, जिन लोगों की जानें जाती हैं, उनसे निपटने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए। गुजरात में भूकंप के मलबे में जो लोग दबे हुए थे, अगर हमारी तैयारी पहले से होती इस तरह की आपदा का सामना करने के लिए तो हम बहुत से लोगों की जान बचा सकते थे और इसलिए इस दिशा में हमें चिन्ता करने की आवश्यकता है।